RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय विदेश नीति का बदलता स्वरूप (1947–2018)

डा0 मनोरमा कुमारी
(राजनीतिक विज्ञान)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 07 September 2018

Keywords
विदेश नीति राजनय, गुटनिरपेक्षता, कष्मीर समस्या, डोकलाम विवाद संयुक्त राष्ट्र संघ, परमाणु परीक्षण।

ABSTRACT

विदेश नीति और राजनय को अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों के संचाालन की प्रक्रिया के यान के दो पहिये कहा जा सकता है। आज कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं है। राज्यों की एक दुसरे पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। व्यक्तियों की भांति राज्य भी अपने हितों की अभिवृद्धि का निरंतर प्रयास करते रहते है।इन हितों को राष्ट्रीय हित कहते है। प्रत्येक रज्य अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए विदेश नीति का निर्घारण करता है। किसी भी राज्य की विदेश नीति मुख्य रूप से कुछ सिद्धांतों, हितों एवं उद्देश्यों का समूह होता है जिनके माध्यम से वह राज्य दुसरे राष्ट्रों के साथ संबंध स्थापित करके उन सिद्दांतों की पूर्ति करने हेतु कार्यरत रहता है।

भारत ने स्वतंत्रता के बाद जिस विदेश नीति का निर्माण किया वह देश की सभ्यता, संस्कृति तथा राजनीतिक परंपरा को प्रतिबिंवित करती है। भारत की विदेश नीति, निर्माताओं के समक्ष प्राचीन विद्वान कौटिल्य का दर्शन उपलब्ध था। प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने सम्राट अशोक के आदर्शो पर चलने का निश्चय किया और अर्न्तराष्ट्रीय शांति तथा अर्न्तराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण समाधान जैसे मुल्यों को संविधान में शामिल किया तथा गुटनिरपेक्षता को अपनी विदेशनीति विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया।

प्रमुख बिन्दुः–
विदेश नीति का अर्थ।
भारत की विदेश नीति।
विदेशा नीति का प्रभाव।
वर्त्तमान परिपक्ष्य में भारतीय विदेश नीति का महत्व।
मोदी युग तथा भारतीय विदेश नीति।

परिचयः–

विदेश नीति क्या है? साधारण शब्दों में विदेश नीति का अर्थ है उन सिद्धांतों का समूह जो एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों के दौरान अपने राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के लिए अपनाता है। विदेश नीति में राष्ट्र के वे सभी कार्य शामिल होते है जिसके द्वारा वह दूसरे देशों के व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करता है तथा अर्न्तराष्ट्रीय वातावरण में अपने व्यवहार को संयोजित करता है। विदेश नीति का लक्ष्य दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को सफलतापूर्वक बदलना होता है लेकिन बहत से विद्वान इस व्याख्या को उचित नहीं मानते। उनके विचार में विदेश नीति का उद्देश्य हमेशा परिवर्त्तन नहीं होता है, कभी–कभी यह बहत बार उनका लक्ष्य दुसरे देशों के व्वहार को बदलना तथा उसे व्यवस्थित करना या बनाए रखान भी होता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि विदेश नीति सिद्धांतों तथा सधनों का समूह है जो राष्ट्र द्वारा राष्ट्रहित को परिभाषित करने में अपने उद्देश्यों का औचित्य सिद्ध करने तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए अपनाये जाते है।

नहेरू युग में भारती विदेश नीतिः–

स्वतंत्रता के बाद प्रथम बार भारत को अपनी विदेश नीति स्वयं तैयार करने का अवसर प्राप्त हुआ। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू पर यह जिम्मेदारी थी कि वह अन्य राष्ट्रों से मधुर संबंध

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बनाते हुए भारत का विकास करें। नेहरू जी ने दुरदर्शिता का परिचय देते हुए गुटनिरपेक्षता को भारतीय विदेश नीति का एक अंग बना लिया। भारत ने तत्कालीन दोनों गुटों से असंलग्नता बनए रखते हुए स्वतंत्र अस्तित्व को कायम किया।

नेहरू जी ने भारतीय विदेश नीति में अंतराष्ट्रीय शांति को बढ़ावा दिया तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों में सहयोग किया। पराधीन राष्ट्रों की स्वतंत्रता तथा नव स्वतंत्र राष्ट्रों को साम्रज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के चंगुल से बचाया। नवम्बर 1946 में संयुक्त राष्ट्र की महासभा में भारत ने दक्षिण अफ्रीका में जातिय भेदभाव को समाप्त करने का प्रस्ताव रखा। 1954 में भारत–चीन के बीच पंचशली समझौता हुआ जो दो राष्ट्रों में सौहार्द तथा शांतिपूर्ण संबंध स्थापित करने का अनूठा प्रयास था। परंतु 1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण भारतीय विदेश नीति की असफलता का संकेत देती है। लेकिन नेहरू युग में भारतीय विदेश नीति अपनी पराकाष्ठा पर थी।

शास्त्री युग में भारत की विदेश नीतिः–

श्री लाल बहादुर षास्त्री लगभग 01 वर्ष तथा 09 माह तक भारत के प्रधानमंत्री रहें। उनके समय में भारत की विदेश नीति ने एक नया मोड़ लिया। 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया जिसका भारतीय सेना ने मुँहतोड़ जवाब दिया इसके वावजूद भी भारत सरकार ने शंति की पहल कर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। शास्त्री जी ने तमिलों के प्रवास की समस्या का भी समाधान किया।

श्रीमती इंदिरा गॉधी की विदेश नीति का प्रथम कालः–

शास्त्री जी के देहांत के बाद इंदिरा गॉधी प्रधानमंत्री बनीं। 1971 में भारत–पाक युद्ध में बड़ी जीत ने उनकी छवि को चार चॉद लगा दिये तथा बंगलादेश के निर्माण में भी उनकी सक्रिय भुमिका रही। भारत तथा सोवियत संघ में इस काल में काफी घनिष्ठ मित्रता हुई। 1974 में भारत ने एक परमाणु संपन्न देश बनना भी भारतीय विदेश नीति के सफलतम प्रयोग का उदाहरण है। इंदिरा गॉधी के काल में आर्थिक और सैनिक आत्मनिर्भरता पर जोर, पड़ोसी देशों के साथ घनिष्ठ संबंध, चीन से तनाव शैशिल्य तथा व्यवहारिक असंलग्नवाद पर जोर दिया गया।

जनता सरकार की विदेश नीति का काल (1977–1980)

जनता सरकार भी विदेश नीति का काल रष्ट्रीय सहमति का विदेश नीति का काल कहलाता है। जनता सरकार में विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने निरंतरता एवं बदलाव के साथ राष्ट्रीय सहमति की विदश नीति पर जोर देते हुए मूलभूत विदेश नीति में कोई बदलाव नहीं किया। प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई को विशुद्ध गुटनिरपेक्षता का जनक भी कहा जाता है।

श्रीमती इंदिरा गॉधी की विदेश नीति का द्वितीय काल (1980 – 1984)

1980 में सोवियत संघा के अफगानिस्तान में हस्तक्षेप पर भारत के राष्ट्रीय हित की रक्षा करने के लिए बिना सोवियत संघ का नाम लिए हस्तक्षेप की आलोचना भी की। इंदिरा गॉधी के काल में हिंद महासागर में महाशक्तियों की नौ–सैनिक प्रतिद्वंदता को खत्म करने के लिए नौ–सैनिक प्रतिद्वंदता का तीव्र विरोध किया। 1982 में उन्होंनें इसे संकट का क्षेत्र कहना शुरू किया । इंदिरा गॉधी के काल में पाकिस्तान, चीन तथा अमेरिका से भी अच्छे सम्बम्ध स्थापित करने के प्रयास किये गए।

श्री राजीव गॉधी काल (1984 – 1989):

श्रीमति इंदिरा गॉधी के निधन के पश्चात् राजीव गॉधी प्रधानमंत्री बनें। उन्होंने भारत की विदेश नीति को

RRIJM 2015, All Rights Reserved

व्यवहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने अर्न्तराष्ट्रीय समस्याओं के प्रति प्रगतिशील तथा नमनीय कदम उठाए। दक्षिण अफ्रिका की जातीय विभेद की नीति का विरोध किया तथा तमिल समस्यो के समाधान का भी प्रयास किया।

गठबंधन युग तथा भारतीय विदेश नीति–

राजीव गॉधी के देहान्त के पश्चात् कोई भी दल स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में सफल नहीं हो सका। उनके बाद निम्न प्रधानमंत्री बने जो कुछ समय के लिए सत्ता में रहें।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह–

वी.पी.सिंह के कार्यकाल में इन्द्रकुमार गुजराल विदेश मंत्री के पद पर कार्यरत थे। खाड़ी युद्ध के समय वी.पी. सिंह ने किसी भी पक्ष का साथ न देने का निर्णय लिया। 1990 में भारत और पाकिस्तान के संबंधों को भी मधुर बनाने का प्रयास किया। राजीव गॉधी द्वारा श्रीलंका में नियुक्त शान्ति बल को 1990 में वापिस बुलाकर वी.पी. सिंह ने साहसिक कार्य किया।

श्री चंद्रशेखर–

11 महिने बाद ही वी.पी. सिंह की सरकार नवम्बर 1990 में गिर गई और चनद्रशेखर अगले प्रधानमंत्री बने। चंद्रशेखर सरकार ने कुवैत पर आक्रमण के लिए ईराक की निंदा की। खाड़ी युद्ध के समय अमेरिका के विमानों को भारत में उतर पाने की सुविधा दी।

श्री पी.वी. नरसिंह राव–

राव सरकार ने विदेश नीति की ओर ध्यान देते हुए कश्मीर विवाद को हल करने का प्रयास किया तथा चीन के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए वार्ताएं किया। वैश्वीकरण की नीति को अपनाकर राव सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाया।

श्री एच.डी. देवगौड़ा–

तेरह राजनीतिक दलों से बनी सरकार में विदेशी मामलों का अनुभव नहीं था। परन्तु इन्द्र कुमार गुजराल ने यह भार संभाल लिया। गुजराल ने दक्षिण एशिया के देशों को रियायतें देकर संबंध सुधारने का प्रयास किया। चीन तथा भारत के संबंधों को सुधारने के प्रयास किए गए। 1996 में भारत तथा बांग्लादेश के बीच गंगाजल के बंटवारे का 30 वर्षीय समझौता हुआ जिसमें दोनों देश संतुष्ट थे।

श्री इन्द्रकुमार गुजराल–

अप्रैल 1997 में एक राजनीतिक संकट के बाद श्री देवगौड़ा की जगह इन्द्रकुमार गुजराल देश के नये प्रधानमंत्री बनें। इन्होंने विदेश विभाग अपने पास रखा। पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद तथा कश्मीर समस्या के हल के लिए बार–बार प्रयास किये। आतंकवाद को खत्म करने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा में रखा तथा विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत को स्थायी सदस्यता प्राप्त कराने के प्रयास किये। परमाणु अप्रसार संधि 1968 तथा व्यापक परमाणु निषेध (1996) पर हस्ताक्षर करने से दृढ़तापूर्वक मना किया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी–

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक कुशल पूर्व राजनयिक वृजेश मिश्र को अपना प्रधान सचिव निरयुक्त किया। भारत गुजराल सिद्धांत से दो कदम आगे बढ़ कर सभी पड़ोसियों के साथ मैत्री तथा सदभावना के लिए अग्रसर हुआ। मई 1998 में पोखरन में भारत द्वारा 05 भुमिगत परमाणु परीक्षणों की पाकिस्तान पॉचों परमाणु सम्पन्न देशों तथा जापान में तीव्र प्रतिक्रिया रही, लेकिन

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अटल बिहारी वाजपेयी अडिग रहे। 1999 में पाकिस्तान के साथ मधुर संबंध बनाने के लिए लाहौर की यात्रा की, परन्तु पाकिस्तान ने कागिल पर कब्जा करने का प्रयास किया जिसे भारतीय सेना ने असफल बना दिया।

डा0 मनमोहन सिंह–

डा0 मनमोहन सिंह मई 2004 के अनेक दलों की मिली जुली सरकार के नेता के रूप में प्रधानमंत्री बनें। उन्होनें विदेश मंत्रालय का कार्यभार श्री नटवर सिंह को सौंपा, लेकिन 2005 में ईराकी तेल घोटाले में आरोपित हाने के कारण मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया। 1991 के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के काल में सर्वाधिक महत्व विदेश नीति पर दिया गया। मनमोहन सिंह 1991 में वित्तमंत्री के पद पर भी कार्यरत थे। उन्हें अर्थव्यवस्था में विशेष रूचि थी, लेकिन सभी मामलों पर ध्यान दिया। कश्मीर समस्या को सुलझाने के भी भरपूर प्रयास किये गए। सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के प्रयास किये। 2004–2014 तक लगभग सभी देशों से अच्छे संबंध बनाने के लिए वार्ताएं तथा समझौते किये गए।

मोदी युग तथा भारतीय विदेश नीति–

2014 के आम चुनाव में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा तथा 1991 के बाद कोई दल स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार बनाने में सफल हुआ। श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बनें। वे पहले भी तीन कार्यकाल के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री रह चुके थे। इन्होंनें भारत को विश्व पटल पर समृद्ध बनाने के लिए विदेशों के दौरे किये। भारत सरकार ने पड़ोसी देशों, सार्क देशों, असियान तथा अन्य देशों के साथ संबंधों को मजबुती प्रदान की।

भारत–चीन डोकलाम विवाद को शांतिपूर्ण हल करने का प्रयास किया। बाग्लादेश के साथ चार बीघा कोरिडोर की समस्या को भी हल कर लिया गया। छोटे देशों जैसे नेपाल, भूटान को आर्थिक सहायता प्रदान करके संबंध सुदृढ़ बनाये गए। कश्मीर समस्या के स्थायी हल का प्रयास किया गया परन्तु पाकिस्तान के असहयोग के वजह से हल अब तक नहीं किया जा सका। इस काल में भारत ने अमेरिका, रूस तथा फ्रांस से भी अपने रिश्ते मजबूत बना लिये।

आतंकबाद के मुद्दे को भी विश्व स्तर पर हल करने का प्रयास किया।

निष्कर्षः–

भारत विदेश नीति के बदलते स्वरूप में भारत ने विशेष गति से विकास किया है। गुटर्निपेक्षता की नीति भारत की विदेश नीति का एक अहम हिस्सा रहा है जो न केवल दो गुटों में शामिल होने से बचाता है बल्कि सभी देशों से एक समान व्यवहार करने का मार्ग प्रशस्त करता है। भारतीय विदेश नीति शान्ति बनाए रखने पर अधिक विश्वास करती है।

संदर्भ सूचीः–

1. वी.एन. खन्ना एवं लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि., नोएडा।
2. डा. वी. सिंह गहलौत, भारतीय विदेश नीति, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
3. आर.एस. यादव, अंक जुलाई 2018.
4. डा. ब्रजेन्द्र प्रताप गौतम, भारत की विदेश नीति।

RRIJM 2015, All Rights Reserved